Course – BA Education Hons, Part III
Paper – VI (Educational Guidance & Curriculum Constructi
Topic – Need & Importance of Guidance.
prepared by – Dr. Sangeeta Kumari

इकाई 2 : निर्देशन की आवश्यकता तथा महत्व
Unit 2 : Need & Importance of Guidance

2.1 निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्व :-

वर्तमान शताब्दी में वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप बड़ी तीव्रगति से शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक तथा व्यक्तिगत क्षेत्र में परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों के कारण मनुष्य का जीवन पहले की अपेक्षा और अधिक जटिल हो गया है। व्यक्ति और समाज का महत्व निखर बना रहे, इसके लिए यह परम आवश्यक है कि दोनों के बीच संतुलन बना रहे। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में निर्देशन की आवश्यकता है :-

2.2 शैक्षिक दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता :-

व्यक्ति के विकास से संबंधित समस्त प्रक्रियाओं में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शैक्षिक दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता निम्नलिखित है :—

(i) व्यक्तिगत भिन्नता के अनुरूप शिक्षा का विशेष :-

यह अत्यन्त आवश्यक है कि छात्रों को व्यक्तिगत भिन्नता के अनुरूप ही शिक्षा की व्यवस्था की जाए। परन्तु विद्यालयी कक्षाओं में छात्रों की विशेष वृद्धि के कारण इस सिद्धान्त का व्यवहारिक प्रयोग कठिन हो गया है। इस स्थिति में निर्देशन सेवाओं के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(2) सार्थक पाठ्यक्रम का चयन :-

विद्यालय के पाठ्यक्रम में अनेक नवीन विषयों का समावेश किया गया है। इन समस्त विषयों के अध्ययन के लिए पृथक-पृथक प्रकार की रुचि, अभिरुचि एवं योग्यता वाले छात्रों की आवश्यकता होती है। अनुपयुक्त विषय के चुनाव के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जिनका छात्रों के भविष्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः पाठ्यक्रम का चयन विद्यार्थी की मनोवृत्ति के अनुरूप ही होना चाहिए। इस दिशा में निर्देशन सेवाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

(3) अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या के समाधान हेतु—

भारतीय विद्यालय में अपव्यय एवं अवरोधन एक गंभीर समस्या है। प्रतिवर्ष 50-60% छात्र अपनी शिक्षा पूर्ण करने से पूर्व विद्यालय छोड़ देते हैं। इसे शिक्षा में अपव्यय की समस्या कहते हैं तथा जब एक ही कक्षा में कई वर्षों तक छात्र अनुत्तीर्ण होता रहता है तो उसे अवरोधन की समस्या के नाम से जाना जाता है। विद्यालयों की असन्तोषप्रद व्यवस्था, अप्रशिक्षित एवं अयोग्य शिक्षकों की नियुक्ति, छात्रों की संख्या में वृद्धि, शुल्क का अधिक होना, व्यक्तिगत भिन्नता की उपेक्षा करना आदि कारण इस समस्या को गंभीर बनाने में सहायक होते हैं। निर्देशन के माध्यम से इस प्रकार की समस्या के कारणों का पता लगाने तथा उनको दूर करने में छात्रों को वांछित दिशा में महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान किया जा सकता है।

2-3 सामाजिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता

सामाजिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता निम्नलिखित है :—

(1) परिवर्तित सामाजिक मूल्य :-

औद्योगीकरण, जनसंख्या वृद्धि, संयुक्त परिवार का विघटन आदि कारणों से आज समाज

में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों के फलस्वरूप पूर्व स्थापित मान्यताओं, आदर्शों एवं मूल्यों में भी निरंतर परिवर्तन हुए हैं। प्राचीन आध्यात्मिक मूल्य पश्चिमी जगत के भौतिकवादी मूल्यों में परिवर्तित हो रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति अनिश्चितता की स्थिति में है तथा उन्हें सही दिशा में प्रेरित करना आवश्यक है। निर्देशन के माध्यम से व्यक्तियों को प्राचीन एवं नवीन मूल्यों के मध्य सामंजस्य स्थापित करते हुए समाज में संतुलित जीवन व्यतीत करना सिखलाया जाता है।

(2) समुचित नियोजन एवं व्यावसायिक समायोजन का महत्व

हमारे देश में उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त भी अनेक प्रतिभाशाली छात्र बेरोजगारी की समस्या से ग्रस्त हैं। शिक्षा एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं के मध्य सही अनुपात का निर्धारण किए बिना इस समस्या का समाधान संभव नहीं है। इस प्रक्रिया में निर्देशन का योगदान महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में सफल व्यावसायिक समायोजन हेतु भी निर्देशन का वांछित उपयोग अत्यन्त आवश्यक है।

(3) जनसंख्या वृद्धि की समस्या:-

भारत एक विशाल जनसंख्या वाला देश है। जनसंख्या विस्फोट के कारण अनेक क्षेत्रों में गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वांछित शिक्षा का अभाव इस समस्या के लिए उत्तरदायी है। समुचित शिक्षा तथा जागरूकता का अभाव इसका एक मुख्य कारण है। अतः निर्देशन द्वारा इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

(4) मानवीय संसाधनों का समुचित उपयोग:-

वैज्ञानिक आविष्कारों के परिणामस्वरूप मानवीय संसाधनों के क्षेत्र में आज पर्याप्त वृद्धि हो चुकी है। इन संसाधनों का समुचित उपयोग एवं प्रयोग करने के लिए पर्याप्त जानकारी की आवश्यकता होती है। इस दिशा में निर्देशन से संबंधित

विभिन्न माध्यमों का प्रभावी उपयोग किया जा सकता है।

2.4 मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकता :-

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह अत्यन्त आवश्यक है कि व्यक्ति का विकास सतत् रूप से होता है किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी आनुवंशिकता एवं परिवेशगत सीमाओं में विकसित होता है। व्यक्ति के अपेक्षित विकास के लिए किस प्रकार का परिवेश आवश्यक है, निर्देशन सेवा के द्वारा यह निश्चित किया जाता है। अतः मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से निर्देशन की आवश्यकताओं के निम्नलिखित कारण है :-

(1) व्यक्तित्व के उचित विकास में सहायक

उचित व्यक्तित्व का विकास समुचित शिक्षा एवं परिवेश द्वारा सम्भव है। इस सन्दर्भ में निर्देशन सेवाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। निर्देशन सेवाओं के द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास किस दिशा में हो रहा है तथा उसे किस प्रकार की सहायता प्रदान करने की आवश्यकता है। अतः व्यक्तित्व से संबंधित अनेक समस्याओं के समाधान में तथा सम्पूर्ण व्यक्तित्व के उचित विकास में निर्देशन का महत्वपूर्ण स्थान है।

(2) संवेगात्मक संतुलन बनाए रखना :-

बालक के संवेगात्मक विकास में परिवार, पड़ोस एवं विद्यालय का विशेष उत्तरदायित्व होता है। इस संतुलन के अभाव में व्यक्ति का समस्त व्यवहार विकृत होने की संभावनाएँ रहती है। इन विकृतियों के कारण बालकों में अनेक संवेगात्मक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है जिनका हल करना आवश्यक होता है। निर्देशन सेवाओं के माध्यम से संवेगात्मक संबंधी समस्याओं का पता लगा उनका उचित समाधान किया जाता है।

(3) वैयक्तिक भिन्नताओं के अनुसार विकास :-

कोई भी व्यक्ति पूर्णतः समान नहीं होते। उनके शारीरिक गठन एवं शारीरिक विकास में

Scanned with CamScanner

होता है। इन व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखकर ही निर्देशन प्रदान की जानी चाहिए।

(4) निर्देशन मनुष्य की आधारभूत आवश्यकता:-

निर्देशन मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। इसके अभाव में मनुष्य का विकास नहीं हो पाता है। बाल्यावस्था से लेकर जीवनपर्यन्त निर्देशन की आवश्यकता होती है।

2.5 निर्देशन के सिद्धान्त :—

निर्देशन के निम्नलिखित सिद्धान्त हैं:—

(1) निर्देशन आजीवन प्रक्रिया है-

निर्देशन एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जो बाल्यावस्था से मृत्युपर्यन्त चलती है।

(2) निर्देशन वैयक्तीकरण पर बल देता है:-

यह इस बात पर महत्व देता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए स्वतंत्रता दी जाए और जब आवश्यकता हो तो व्यक्ति का निर्देशन किया जाना चाहिए।

(3) निर्देशन आत्म निर्देशन को महत्व देता है:-

निर्देशन व्यक्ति को अपने पर्यावरण में अच्छी तरह समायोजित करता है। उसे आत्म-निर्भरता तथा आत्म निर्देशन की ओर अग्रसर करता है।

(4) निर्देशन सहयोग पर आधारित है:-

निर्देशन व्यक्तियों के पारस्परिक सहयोग पर निर्भर करता है। किसी को भी व्यक्ति की स्वयं की सहमति के बिना निर्देशन प्राप्त करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।

(5) निर्देशन सभी के लिए है:-

निर्देशन सभी व्यक्तियों के लिए है जिन्हें इसकी आवश्यकता है।

Scanned with CamScanner

(6) निर्देशन एक संगठित कार्यकलाप है :-
निर्देशन एक संगठित एवं सु
क्रियाकलाप है।

(7) निर्देशन लचीला होता है :-
निर्देशन कार्यक्रम व्यक्ति एवं
की आवश्यकताओं के अनुसार लचीला होना चाहिए।

2.6 अभ्यास के प्रश्न (Question for Exercise) :-

Q1 Describe the need and importance of guida
निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालि

Scanned with CamScanner